अनुवाद

वे मानते हैं कि जीवन के अन्तिम क्षण तक इन्द्रियों की तृप्ति करना ही मनुष्ययोनि का प्रधान प्रयोजन है। इसलिए उनकी चिन्ताओं का कभी अन्त नहीं होता। आशारूप हजारों बन्धनों में बँधे हुए और काम-क्रोध के परायण हुए इन्द्रियतृप्ति के लिए अन्यायपूर्वक धन-संचय करने की चेष्टा करते हैं।।११-१२।।

तात्पर्य

असुर समझते हैं कि इन्द्रियों की तृप्ति करना जीवन का परम लक्ष्य है; मरणकाल की अवधि तक आजीवन उनकी यही धारणा बनी रहती है। मृत्यु के बाद भी कोई जीवन है, यह वे नहीं मानते और न ही यह मानते कि इस संसार में किए कर्म के अनुसार नाना प्रकार की योनियों की प्राप्ति होती है। जीवन के लिए उनकी अनन्त योजनायें हैं; वे योजना पर योजना बनाते रहते हैं, जो कभी पूर्ण नहीं होतीं। हमें ऐसे ही एक आसुरी मनुष्य का प्रत्यक्ष अनुभव है, जो मृत्यु के समय भी चिकित्सक से अपनी जीवन को चार वर्ष के लिए बढ़ा देने का निवेदन कर रहा था, जिससे वह अपनी अपूर्ण योजना पूर्ण कर सके। ऐसे मूर्ख मनुष्य नहीं जानते कि कोई चिकित्सक जीवन की नियत आयु में एक क्षण की भी अभिवृद्धि नहीं कर सकता। किसी की कामना पूरी हुई है या नहीं, मृत्यु यह नहीं देखती। प्रकृति का नियम इतना कठोर है कि कोई नियतकाल से एक क्षण भी अधिक भोग नहीं कर सकता।

ईश्वर अथवा अपने अन्तर्यामी परमात्मा में श्रद्धाविहीन आसुरी स्वभाव वाला इन्द्रियतृप्ति के लिए नाना प्रकार के पापकर्म करता है। वह नहीं जानता कि इस सब का कोई साक्षी भी है, जो उसके हृदय में ही बैठा है। परमात्मा जीव के सब कार्यों को देखते रहते हैं। जैसा उपनिषदों में उल्लेख है, एक वृक्ष पर दो पक्षी बैठे हैं। उनमें से एक पक्षी तो कर्म करता हुआ शाखा पर लगने वाले सुख-दुःखरूपी फलों को भोग रहा है, जबकि दूसरा केवल उसका साक्षी है। आसुरी मनुष्य में न तो वैदिक शास्त्रों का ज्ञान होता है और न श्रद्धा ही होती है। अतः परिणाम की चिन्ता किए बिना इन्द्रिय-तृप्ति के लिए स्वेच्छाचार करने में वह अपने को स्वतंत्र समझता है।

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।१३।।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।।१४।।
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।।१५।।

इदम्=यह; **अद्य**=आज; **मया**=मैंने; **लब्धम्**=प्राप्त किया; **इमम्**=यह; **प्राप्स्ये**=प्राप्त करूँगा; **मनोरथम्**=मन की कामना को; **इदम्**=यह; **अस्ति**=है; **इदम्**=यह; **अपि**=भी; **मे**=मेरा; **भविष्यति**=भविष्य में बढ़ेगा; **पुनः**=फिर; **धनम्**=